सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

ईमानदारी का जादुई फल

हरे-भरे जंगल के पास एक शांत और सुंदर गाँव बसा हुआ था. उस गाँव में रहने वाले बच्चे आपस में बहुत प्रेम से रहते थे. इन्हीं बच्चों में एक लड़का था, जिसका नाम आरव था. आरव बाकी बच्चों से थोड़ा अलग था, क्योंकि उसे केवल खेलना ही नहीं, बल्कि पेड़-पौधों, पक्षियों और जानवरों की देखभाल करना भी बहुत अच्छा लगता था. स्कूल से लौटने के बाद वह रोज़ जंगल के किनारे जाता, वहाँ पक्षियों के लिए दाना रखता और छोटे पौधों में पानी डालता. उसे प्रकृति के बीच रहकर बहुत खुशी मिलती थी. एक दिन जब आरव जंगल में टहल रहा था, तभी उसे झाड़ियों के पीछे से किसी के कराहने की आवाज़ सुनाई दी. पहले तो वह थोड़ा डर गया, लेकिन फिर हिम्मत करके आवाज़ की दिशा में आगे बढ़ा. वहाँ उसने देखा कि एक छोटी-सी नीली चिड़िया ज़मीन पर पड़ी हुई है. उसका एक पंख घायल था और वह उड़ नहीं पा रही थी. आरव को उस चिड़िया पर बहुत दया आई. उसने बड़े प्यार से चिड़िया को अपने हाथों में उठाया और उसे अपने घर ले आया.

घर पहुँचकर आरव ने अपनी माँ को सारी बात बताई. माँ ने चिड़िया के पंख पर दवा लगाई और उसे आराम करने के लिए सुरक्षित जगह पर रख दिया. अगले कई दिनों तक आरव पूरी लगन से उसकी देखभाल करता रहा. वह उसे समय पर दाना-पानी देता, उससे बातें करता और उसके जल्दी ठीक होने की प्रार्थना करता. धीरे-धीरे चिड़िया का पंख ठीक होने लगा और उसमें फिर से जान आ गई. एक सुबह चिड़िया पूरी तरह स्वस्थ हो गई. तभी उसने मीठी आवाज़ में आरव से कहा कि वह बहुत नेक दिल इंसान है. आरव यह सुनकर हैरान रह गया, क्योंकि उसने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई चिड़िया उससे बात कर सकती है. चिड़िया ने बताया कि वह एक जादुई चिड़िया है और आरव की ईमानदारी से बहुत खुश है. यह कहकर उसने अपनी चोंच से एक चमकता हुआ सुनहरा बीज निकाला और आरव को दे दिया. चिड़िया ने आरव से कहा कि यह बीज बहुत खास है और इसे सच्चे मन से बोया जाए तो यह हमेशा सही राह दिखाता है. आरव ने उस बीज को आदर से अपने पास रख लिया और चिड़िया को खुले आसमान में उड़ने के लिए छोड़ दिया. चिड़िया खुशी-खुशी उड़ गई और आरव के मन में एक अजीब-सी खुशी भर गई. अगले दिन आरव ने उस बीज को अपने घर के आँगन में बो दिया. वह रोज़ उस जगह की सफाई करता, पौधे को पानी देता और उसका ध्यान रखता. कुछ ही दिनों में वहाँ से एक नन्हा-सा पौधा निकल आया. यह पौधा बाकी पौधों से अलग था, क्योंकि उसके पत्ते चमकते थे और उससे बहुत ही मीठी खुशबू आती थी. समय के साथ वह पौधा धीरे-धीरे एक बड़े और घने पेड़ में बदल गया.

उसी दौरान गाँव में भयंकर सूखा पड़ गया. खेतों में फसलें सूखने लगीं, तालाब और कुएँ खाली होने लगे और लोगों को पीने के पानी की भी चिंता सताने लगी. बच्चे उदास रहने लगे और गाँव का माहौल दुखी हो गया. तभी एक दिन अचानक आरव के आँगन में लगे पेड़ से साफ और ठंडा पानी निकलने लगा. देखते ही देखते वह पानी बहकर पूरे आँगन में फैल गया. यह खबर पूरे गाँव में फैल गई. गाँव वाले हैरान होकर आरव के घर पहुँचे. सभी ने उस पेड़ का पानी देखा और राहत की साँस ली. उस पेड़ के पानी से पूरे गाँव की ज़रूरतें पूरी होने लगीं. गाँव के मुखिया ने आरव से इस चमत्कार का कारण पूछा, तो आरव ने पूरी सच्चाई सबको बता दी. उसने कहा कि यह सब दया, ईमानदारी और प्रकृति से प्रेम का परिणाम है. कुछ समय बाद एक लालची व्यापारी गाँव में आया. उसने पेड़ के बारे में सुनकर आरव को बहुत सारा धन देने का लालच दिया और पेड़ खरीदना चाहा. लेकिन आरव ने साफ मना कर दिया. उसने कहा कि यह पेड़ किसी एक का नहीं, बल्कि पूरे गाँव का है और वह इसे कभी नहीं बेचेगा. व्यापारी नाराज़ होकर लौट गया, लेकिन गाँव वालों का आरव पर गर्व और भी बढ़ गया.

उस रात आरव ने सपने में फिर से नीली चिड़िया को देखा. चिड़िया ने मुस्कुराकर कहा कि असली जादू बीज में नहीं, बल्कि अच्छे कर्मों में होता है. जब तक लोग ईमानदार, दयालु और प्रकृति से प्रेम करते रहेंगे, तब तक यह पेड़ सबकी मदद करता रहेगा. आरव की आँख खुली तो उसका मन खुशी से भर गया और उसने मन ही मन ठान लिया कि वह हमेशा अच्छा इंसान बनेगा.

सीख

ईमानदारी, दया और प्रकृति से प्रेम करने वाला इंसान हमेशा अच्छा फल पाता है. जो दूसरों की मदद निस्वार्थ भाव से करता है, वही सच्ची खुशी और सम्मान हासिल करता है.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

कविता

प्रकृति की सुंदरता

पेड़ हैं हरे, फूल रंग-बिरंगे,
तितली उड़ती, मधुर गीत संग.

सूरज की रोशनी, चाँद
की चमक,
नदी का पानी, झरने
की झलक.

पक्षी गाते, हवा करती
फुसफुसाहट,
धरती माँ देती हमें ढेरों सौगात.

आओ मिलकर इसे बचाएँ हम,
प्रकृति के साथ हर दिन
मुस्काएँ हम.

भूल भुलैया

रंग भरो

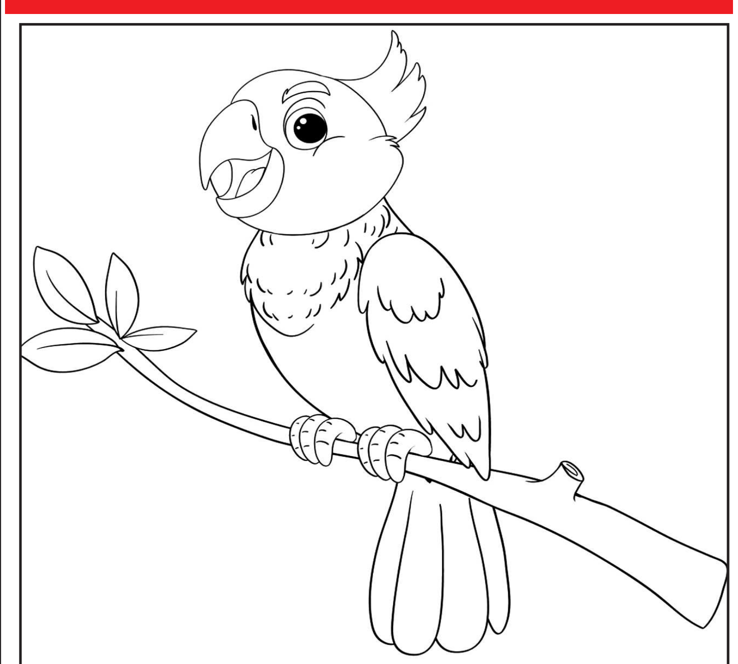

बिंदु मिलाओ

जानकारी

ब्लू व्हेल- समुद्र की विशालकाय स्तनपायी

ब्लू व्हेल दुनिया का सबसे बड़ा और विशाल समुद्री स्तनपायी है. इसका शरीर नीला-धूसर रंग का होता है और त्वचा पर हल्की-हल्की धारियाँ दिखाई देती हैं. ब्लू व्हेल की लंबाई लगभग 30 मीटर तक हो सकती है और इसका वजन 150 टन तक पहुँच सकता है. इस विशालकाय जीव को देखकर समुद्र का दैत्य कहा जाता है.

यह मुख्य रूप से ठंडे समुद्री क्षेत्रों में रहता है और विश्व के महासागरों में इसका अस्तित्व फैला हुआ है. ब्लू व्हेल का भोजन मुख्य रूप से क्रिल यानी छोटे झींगा जैसे समुद्री जीव होते हैं. यह बड़े पैमाने पर पानी निगलकर अपने विशाल थूथन से क्रिल और छोटे जीवों को छान लेता है. रोजाना यह लगभग 4 टन क्रिल तक खा सकती है. ब्लू व्हेल का दिल और श्वास प्रणाली बहुत शक्तिशाली होती है. इसकी धड़कन इतनी जोरदार होती है कि समुद्र की सतह पर भी महसूस की जा सकती है.

ब्लू व्हेल सामाजिक प्राणी है. यह आम तौर पर छोटे समूहों में रहती है, लेकिन कभी-कभी अकेले भी दिखाई देती है. यह अपनी संवाद क्षमता के लिए प्रसिद्ध है. ब्लू व्हेल गहरी और लंबी आवाज़ें निकालती है, जो कई किलोमीटर दूर तक समुद्र में सुनाई देती हैं. इन आवाज़ों से यह अपने साथी व्हेल से संपर्क करती है और भोजन या संतान के लिए दिशा पहचानती है. ब्लू व्हेल आज संरक्षित प्रजाति बन चुकी है. पहले इसका शिकार बड़े पैमाने पर किया जाता था, खासकर इसके मांस और तेल के लिए. अब अंतरराष्ट्रीय कानून और समुद्री संरक्षण प्रयासों की वजह से शिकार कम हो गया है, लेकिन समुद्र प्रदूषण, प्लास्टिक और जलवायु परिवर्तन इसके लिए खतरा बने हुए हैं.

ब्लू व्हेल का जीवनकाल लगभग 80-90 वर्ष का होता है. यह समुद्र के पर्यावरण तंत्र में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. यह पोषक तत्वों के संतुलन को बनाए रखती है और छोटे समुद्री जीवों की संख्या नियंत्रित करती है. इसके अलावा, ब्लू व्हेल समुद्र की जैव विविधता और प्राकृतिक संतुलन को बनाए रखने में मदद करती है. इस प्रकार, ब्लू व्हेल केवल महासागर की सबसे बड़ी स्तनपायी नहीं है, बल्कि यह हमारे समुद्र के पर्यावरण तंत्र और जीवन के संतुलन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है.

कमल के रोचक तथ्य

- कमल की जड़ें तलछटी मिट्टी में बहुत मजबूत होती हैं.
- कमल की पत्तियाँ पानी और धूल को चिपकने नहीं देती .
- कमल के बीज 1000 साल तक जीवित रह सकते हैं.
- कमल अत्यधिक गर्मी ठंड दोनों सह सकता है.
- कुछ प्रजातियों के फूल खिलने पर रंग बदलते हैं.
- कमल जल में रहने वाले छोटे जीवों के लिए आश्रय बनाता है.
- पत्तियाँ सूरज की रोशनी अवशोषित करके ऊर्जा संरक्षित करती हैं.
- कमल जल संतुलन बनाए रखने में मदद करता है.

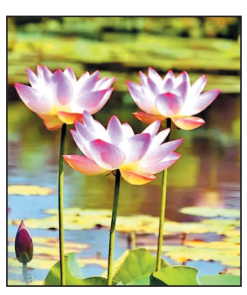

- यह एशिया, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका में भी उगता है और अलग-अलग सांस्कृतिक महत्व रखता है.

प्रेरक प्रसंग

नवाब राय से प्रेमचंद तक : साहित्य का अमर सफर

मुंशी प्रेमचंद हिंदी और उर्दू साहित्य के ऐसे महान लेखक थे, जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज की सच्ची तस्वीर सामने रखी. उनका जन्म 31 जुलाई 1880 को उत्तर प्रदेश के लमही गाँव (वाराणसी) में हुआ था. उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था. बचपन में उन्हें प्यार से 'नवाब राय' भी कहा जाता था और बाद में उन्होंने 'प्रेमचंद' नाम से लिखना शुरू किया, जिससे वे पूरे देश में प्रसिद्ध हुए.

प्रेमचंद का बचपन बहुत कठिनाइयों में बीता. कम उम्र में ही माता-पिता का साया उठ गया, जिससे उन्हें संघर्षपूर्ण जीवन जीना पड़ा. आर्थिक तंगी के कारण वे पढ़ाई के साथ-साथ नौकरी भी करते रहे. वे कुछ समय तक शिक्षक और फिर स्कूल निरीक्षक (डिप्टी इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स) भी रहे. ब्रिटिश शासन के समय उन्होंने अंग्रेज़ी सरकार की नौकरी छोड़ दी, क्योंकि वे देश की आज़ादी और सामाजिक न्याय के पक्ष में थे. यह निर्णय उनके साहस और देशप्रेम को दर्शाता है. मुंशी प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट' कहा जाता है. उन्होंने अपने लेखन में किसान, मजदूर, नारी, दलित और गरीब वर्ग के दुख-दर्द को बहुत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया. उनकी कहानियाँ और उपन्यास समाज में फैली कुरीतियों, गरीबी, शोषण और अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाते हैं. उनकी भाषा सरल, सहज और आम आदमी की भाषा थी, जिससे हर वर्ग का पाठक उनसे जुड़ सका.

प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों में गोदान, गबन, कर्मभूमि, निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि और कायाकल्प शामिल हैं. विशेष रूप से गोदान को हिंदी साहित्य का एक महान उपन्यास माना जाता है, जिसमें किसान जीवन की पीड़ा को गहराई से दिखाया गया है. उनकी प्रसिद्ध कहानियों में ईदगाह, कफन, पूस की रात, नमक का दरोगा, ठाकुर का कुआँ और बड़े घर की बेटी शामिल हैं, जो आज भी स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाई जाती हैं. हालाँकि प्रेमचंद मुख्य रूप से कहानीकार और उपन्यासकार थे, लेकिन उन्होंने कुछ निबंध और लेख भी लिखे.

उनकी कविताएँ बहुत अधिक प्रसिद्ध नहीं हैं, क्योंकि उनका झुकाव गद्य साहित्य की ओर अधिक था. फिर भी उनके लेखन में मानवीय संवेदना और नैतिक मूल्य कविता की तरह प्रभावशाली लगते हैं. मुंशी प्रेमचंद का जीवन हमें सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी सच्चाई और ईमानदारी का रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए. उन्होंने कभी धन या प्रसिद्धि के लिए लेखन नहीं किया, बल्कि समाज सुधार को अपना उद्देश्य बनाया. 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया, लेकिन उनकी रचनाएँ आज भी जीवित हैं और लोगों को सही रास्ता दिखा रही हैं.

बूझो तो जानें

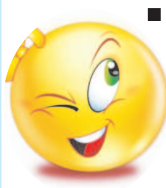

- मैं दिन में चमकता, रात में सो जाता हूँ.
  उत्तर: सूरज
- मैं गोल, नारंगी और मीठा हूँ.
  उत्तर: संतरा
- मेरे चार पैर हैं, भौंकता हूँ, घर का दोस्त हूँ.
  उत्तर: कुत्ता
- मैं पानी में तैरता हूँ, जमीं पर नहीं.
  उत्तर: मछली
- रात में चमकता हूँ, आसमान में बहुत सारे हैं.
  उत्तर: तारा
- मैं लंबा हूँ, फल देता हूँ, जंगल में रहता हूँ.
  उत्तर: आम का पेड़
- मेरा रंग हरा, सब्ज़ियों में सबसे प्यारा.
  उत्तर: पालक
- मुझे पीते हैं बच्चे, दांत बनते मजबूत.
  उत्तर: दूध
- कटने पर खुशबू फैलती, खाना बनाने में काम आता हूँ.
  उत्तर: प्याज
- मुझे खोलो, अंदर लाल दाने, मीठा और रस वाला.
  उत्तर: अनार

हंसी-ठिठोली

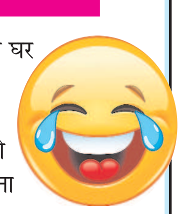

- पप्पू: 'मम्मी, मछली का घर कहाँ है?'
  मम्मी: 'पानी में.'
  पप्पू: 'तो फिर मछली को मकान टैक्स क्यों नही देना पड़ता?'
- टीचर: 'अगर तुम्हारे पास 10 चॉकलेट हैं और तुम्हारा दोस्त 2 ले ले, तो क्या होगा?'
  बच्चा: 'सर, मेरी दोस्ती खतरे में पड़ेगी!'
- पप्पू अपने दोस्त से: 'मेरे जूते तो गायब हो गए.'
  'दोस्त: 'कहाँ गए?'
  पप्पू: 'मेरी मम्मी ने पहन लिया, बोली अच्छा लग रहा है!'
- बबलू: 'पापा, मुझे स्कूल नहीं जाना.'
  पापा: 'क्यों बेटा?'
  बबलू: 'क्योंकि मैं होमवर्क से डरता हूँ.'
  पापा: 'तो डर क्यों नहीं लगता टीवी से?'
  बबलू: 'टीवी डराती नहीं, हँसाती है!'
- पप्पू: 'डॉक्टर साहब, मुझे नींद नहीं आती.'
  डॉक्टर: 'सोने की दवा लो.'
  पप्पू: 'मैंने खा ली, लेकिन सपना देखने की आदत नहीं छोड़ता.'
- मम्मी: 'तुम्हारे पेंसिल में इरेज़र क्यों नहीं है?'
  पप्पू: 'मम्मी, गलतियाँ तो मैं बार-बार करता हूँ, इरेज़र जल्दी खत्म हो जाएगा!'

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**